छन्द

अज्ञेय

मैं सभी ओर से खुला हूँ
वन-सा, वन-सा अपने में बन्द हूँ
शब्द में मेरी समाई नहीं होगी
मैं सन्नाटे का छन्द हूँ।

'अज्ञेय', **ऐसा कोई घर आपने देखा है**
दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1986:79